International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-07-2022, Accepted: 03-08-2022, Published: 18-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 69-74

स्नेह संबंधों का आधार–रामायण

ब्रजेश कुमार
शोधार्थी, स्वतंत्र लेखक एवं शाखा प्रबंधक–नई गूँज पत्रिका, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

रामायण के प्रत्येक चरित्र ने समाज को चिर काल तक जीवंत शिक्षा प्रदान की है !
वह शिक्षा जो जीवन में आत्मसात हो जाती है अर्थात घुल मिल जाती है !
आज के आधुनिक मानव समुदाय को वास्तविक अर्थो में धर्म का, कर्तव्य का अर्थ बता पाना ही इस लेख का उद्देश्य है !
स्नेह संबंधों के तार ऐसे मजबूत बंधन होते है जो साथ हों तो सबसे बड़ी शक्ति बन सकते हैं अन्यथा सबसे बड़ी कमजोरी!
रामायण के प्रत्येक पात्र ने संबंधों में निहित निस्वार्थ प्रेम का अनुपम उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है ! संबंधों का निस्वार्थ होना सबसे उत्तम लक्षण है एक सच्चे सम्बन्ध का ! आज का युग कितना भी प्रगति क्यों नहीं कर चुका लेकिन संवेदनाये तो जीवंत हैं ही नहीं ! सामान तो कीमती हैं लेकिन व्यक्ति नहीं !
ऐसे समय में समाज की दृष्टि को इस ओर जागृत करने के उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत विषय – स्नेह संबंधों का प्रमुख आधार – रामायण को लिया गया है !

मूल शब्दः रामायण, सम्बन्ध, स्नेह एवं प्रेम, राम, यात्रा, वृत्तांत, आदर्श पुरुष, मर्यादित पुरुष

प्रस्तावना

समाज को नई दिशा देती है रामायण,
घर को मंदिर बनाती है रामायण,
कौन कहता है क्या नहीं है रामायण,
विश्व की आत्मा में बसती है रामायण !

संसार में रामायण एक अद्वितीय महाकाव्य है! जिसकी रचना महर्षि बाल्मीकि ने की! इस महाकाव्य में सूर्यवंशी राम के जीवन पर प्रकाश डाला गया है! तथा समाज में उन्होंने जीवन आदर्श और मर्यादाओं को जी कर दिखाया है! आज संसार के सामने आर्य शिरोमणि राम का जीवन उदाहरण के रूप में प्रस्तुत होता है! इस आदि महाकाव्य में 24000 श्लोक हैं! यह महाकाव्य आर्य सभ्यता अर्थात् वैदिक संस्कृति से ओतप्रोत है! रामायण दो शब्दों से मिलकर बना है राम. आयन अर्थात् जिसका अर्थ होता है राम की यात्रा!
इस रामायण में सात कांड है ! इस ग्रंथ का लेखन संस्कृत भाषा में किया गया है! यह ग्रंथ जीवन जीने के तरीके तथा जीवन में आने वाली समस्याओं से लड़ना सिखाता है! साथ– साथ प्यार, क्षमा, करुणा,दया, विश्वास, सत्यता और कर्तव्यों का पालन आदि गुणों को अपनाने की सीख देता है! इस महाकाव्य ने संसार के लोगों को महत्वपूर्ण शिक्षा दी है कि विजय हमेशा सत्य की होती है, संकट के समय धैर्य रखना, निस्वार्थ भक्ति तथा छोटे– बड़ों का सम्मान, अपने कर्तव्यों का मर्यादा पूर्वक पालन करना सिखाती है!
इस महाकाव्य की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि परिवार में आपसी रिश्ते कैसे होने चाहिए! यहां पर राम का जीवन आदर्श पुत्र तथा मर्यादाओ और कर्तव्य से परिपूर्ण दिखाया है! स्त्री पात्रों में माता कौशल्या और सुमित्रा को आदर्श माँ, सीता और उर्मिला को आदर्श पत्नी तथा त्याग की मूर्ति रही है! हनुमान की सेवक भक्ति, लक्ष्मण और भरत का भाई से प्रेम तथा महाराजा दशरथ का धर्म एवं वचन के प्रति अडिग रहकर अपने प्राण देकर भी इनकी रक्षा करना बताया है! इस महाकाव्य ने संसार के लोगों को आपस में कैसे रहना चाहिए का अनुपम उदाहरण तथा ज्ञान दिया है!
रामायण महाकाव्य का कई भाषाओ में अनुवाद हुआ है! तुलसीदास की रामचरितमानस जो कि अवधी भाषा में है! वह भी जनमानस में बहुत लोकप्रिय है तथा इसके बाद राधेश्याम रामायण, कंबन रामायण, मैथिलीशरण गुप्त का साकेत व पंचवटी अद्भुत रचना है!

भाई के प्रति भाई का प्रेम

रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जहाँ पर भाई – भाई के लिए अपना राज – पाट सब त्याग देता है तथा मुनि वस्त्रों में अपने भाई के प्रेम में जीवन गुजार देता है ! ऐसा भाई के प्रति भाई का असीम प्रेम, आज तक कहीं नहीं देखा गया ! जो चित्रकूट पर राम और भरत के बीच देखने को मिलता है ! आज भी भाई के प्रति भाई के प्रेम की मिसाल दी जाती है !
वाल्मीकि रामायण में राम अपने भाइयों के प्रति प्रेम को प्रकट करते हुए कहते हैं कि –

यद्विना भरतं त्वां च शत्रुघ्नं चापि मानद ।
भवेन्मम सुखं किंचिद्भस्म तत्कुरुतां शिखी ।

वाल्मीकि रामायण २ - ९७-८

अर्थात रू हे लक्ष्मण यदि मुझे भरत , शत्रुघ्न और तुम्हारे बिना संसार की सारी खुशियां भी मिल जाएं तो वो अग्नि में राख हो जाएं , मुझे वो खुशियां नहीं चाहिएं !

श्री रामचरित मानस में बाबा तुलसीदास जी लिखते हैं कि
भाई के प्रेम में डूबा हुआ भरत जी कि स्थिति देखने लायक है जिसकी करोड़ों मुख से भी प्रशंसा करना कम है !

मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ।।
गुर पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ।२।

मैं तो प्रभु (आप) के स्नेहमें पला हुआ छोटा बच्चा हूँ ! कहीं हंस भी मन्दराचल या सुमेरु पर्वतको उठा सकते हैं ! हे नाथ ! स्वभावसे ही कहता हूँ, आप विश्वास करें, मैं आपको छोड़कर गुरु, पिता, माता किसीको भी नहीं जानता ।!२।।

जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ।।
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु अंतरजामी ।।3 ।।

जगत में जहाँ तक स्नेह का सम्बन्ध , प्रेम और विश्वास है,
जिनको स्वयं वेद ने गाया है – हे स्वामी ! हे दीनबन्धु ! हे सबके हृदयके अंदर की जानने वाले ! मेरे तो वे सब कुछ केवल आप ही हैं ।।3 ।।

भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबस रघुराजू ।।
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं । सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ।।२।।

श्री रामचंद्र जी ने भरत के प्रेम के वशीभूत होकर सकल समाज की उपस्थिति में अपनी चरण पादुकायें भरत जी को दें दीं, भरत जी ने अपने बड़े भाई का आशीर्वाद समझकर चरण पादुकाओं को अपनी शीश पर धर लिया !
राधेश्याम जी ने अपनी रामायण में भाई के प्रति भाई का प्रेम देख कर जो लिखा है वह आज समाज के लिए अद्भुत है !

नंगे थे पाँव बावले के, कीचड़ मिट्टी में लिसे हुए ।
कुछ – कुछ बह रहा रक्त भी था, काँटे भी थे चुभे हुए ।
थे काले बाल , धूलि – धूसर, पीले मुखड़े पर पड़े हुए ।
जिस भाँति भयानक आँधी में, श्रीसूर्यदेव हों छिपे हुए ।
उस पर उसकी उस हालत पर, दर्दीली चितवन जमीं तुरत ।
आगे को सीतानाथ बढ़े , आजानु भुजाएँ बढ़ा तुरत । ।
वह व्याकुलता थी बढ़ने की , धनु कहीं , कहीं पर तीर गिरा ।
महि पर तर्कश के साथ – साथ , वह मुनियों वाला चीर गिरा । ।
बावला चाहता है पहले , रघुवर को शीश झुका लूँ मैं ।
रघुवीर चाहते हैं पहले , छाती से उसे लगा लूँ मैं । ।
आखिर रघुवर की विजय हुई , हाथों पर उठा लिया उसको ।
वह चरण छुए उससे पहले , छाती से लगा लिया उसको । ।
जब हृदय – हृदय का मिलन हुआ , तो दूर विरह का ताप हुआ ।
अब सबने देखा , चित्रकूट में , ऐसे ' भरत – मिलाप ' हुआ ।

जब लक्ष्मण और मेघनाथ का युद्ध हो रहा था, तब लक्ष्मण को मेघनाथ ने मूर्छित कर दिया ! मूर्छित अवस्था में अपने भाई लक्ष्मण को देख कर श्री राम की जो स्थिति हुई, वह निम्न है –
शोणितामिमन् वीरं प्राणैरिष्टतरं मम द्य

पश्यतो मम का शक्तिर्योद्धं पर्याकुलात्मनः । ।

वाल्मीकि रामायण ६–१०१–४

अर्थात रू श्री राम कहते हैं – लक्ष्मण को रक्त से यूं सने देख कर मेरी युद्ध करने की उर्जा खत्म हो रही है । लक्ष्मण मुझे अपने प्राणों से भी ज्यादा प्रिय हैं ।

को हि मे जीवितेनार्थस्त्वयि पञ्चत्वमागते ।
न हि मे जीवितेनार्थः सीतया च जयेन वा । ।

वाल्मीकि रामायण ६–१०१–५०

अर्थात रू तुम्हें अगर कुछ हो जाता तो मेरे लिए फिर इस संसार में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाता , न तो मेरे जीवन का कोई उद्देश्य रह जाता , न सीता और न ही विजय मेरे लिए महत्वपूर्ण रह जाती !
तुलसीदास जी ने भी श्रीराम और लक्ष्मण के प्रेम का अद्‌भुत वर्णन किया है कि –

जौं जनतेउं वन बंधु बिछोहू ,
पिता बचन मनतेउं नहिं ओउं !

अर्थात रू अगर मुझे ये पता रहता कि वनवास में मुझे लक्ष्मण का वियोग सहना होगा तो मैं अपने पिता के आदेश का भी पालन नहीं करता । देखिए श्री राम अपने भाई लक्ष्मण के लिए रघुकुल रीत सदा चली आई , प्राण जाए पर बचन न जाई से भी मुकरने के लिए तैयार हो गए । श्री राम के लिए लक्ष्मण से बढ़कर कुछ भी नहीं था ।

सुत बित नारी भवन परिवारा , होहिं जाहि जग बारहिं बारा !
अस बिचारी जियं जागहु ताता , मिलई न जगत सहोदर भ्राता !!

अर्थात रू श्री राम कहते हैं कि पत्नी , पुत्र , परिवार इस संसार मे बार – बार मिल सकते हैं लेकिन सहोदर भाई बार – बार नहीं मिलते ।

पत्नि का पति धर्म

वाल्मीकि रामायण में माता अनुसूया के द्वारा महारानी सीता को पति व्रत धर्म का जो उपदेश दिया गया है, वह निम्न है –
विदितं तु ममाप्येतद्यथा नार्याः पतिर्गुरुः
(वाल्मीकि रामायण. अयोध्या कांड.)
भावार्थ – आदर्श महारानी सीता कहती हैं कि मुझे भी यह मालूम है कि स्त्री का गुरु पति ही होता है ।
रावण के द्वारा भगवान राम की निन्दा किये जाने पर फिर कहती हैं कि ––

निर्वासित होने पर भी वह कहती हैं कि स्त्री के लिए तो पति ही देवता व पति ही बन्धु तथा पति ही गुरु है ।

दीनोश्च राज्यहीनो वै योमे भर्ता स में गुरुः
पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुर्पतिर्गुरुः
(वाल्मीकि रामायण. अयोध्या कांड.)

रामचरित मानस में भी माता अनुसूया सीता जी को जो उपदेश देती हैं, वह निम्न है –
'मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी पत्नि का पति धर्म

अमित दानि भर्ता बयदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही । । 3 । ।

भावार्थ रू हे राजकुमारी ! सुनिए– माता , पिता , भाई सभी हित करने वाले हैं , परन्तु ये सब एक सीमा तक ही (सुख) देने वाले हैं , परन्तु हे जानकी ! पति तो (मोक्ष रूप) असीम (सुख) देने वाला है । वह स्त्री अधम है , जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती । । 3 । ।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी । ।
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना । । 4 । ।

भावार्थ रू धैर्य , धर्म , मित्र और स्त्री– इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है । वृद्ध , रोगी , मूर्ख , निर्धन , अंधा , बहरा , क्रोधी और अत्यन्त ही दीन – । । 4 । ।

मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं ।
पिय बियोग सम दुख्न जग नाही !!4!!

परन्तु मैंने मनमें समझकर देख लिया कि पति वियोग के समान जग में कोई की दुःख नहीं है 1 । । 8 । ।

जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु नियहि तरनिहु ते ताते । ।
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सब सोक समाजू । । 2 । ।

हे नाथ ! जहाँ तक स्नेह और नाते हैं, कि पति के बिना स्त्री को सभी सूर्य से भी बढ़कर तपानेवाले हैं । शरीर , धन , घर , पृथ्वी , नगर और राज्य , पति के बिना स्त्री के लिये यह सब शोक का समाज है । । 2। ।

एक ऐसा पात्र जिसके गृह और त्याग को किसी ने भी नहीं समझा और ना ही इस पर किसी का धयान गया ! वह पात्र है लक्ष्मण की पत्नि उर्मिला !
उर्मिला के त्याग और उसकी मनः स्थिति का भाव पूर्ण वर्णन मैथिलि शरण गुप्त ने अपनी रचना साकेत मेकिया है वह निम्न है –

मानस – मन्दिर में सती , पति की प्रतिमा थाप ,
जलती – सी उस विरह में , बनी आरती आप ।

(उर्मिला के ह्रदय में अपने पति की ही प्रतिमा है लेकिन वह विरह से व्याकुल हैं और उसमें किसी आरती की लौ के समान स्वयं जल रही हैं)

आँखों में प्रिय – मूर्ति थी , भूले थे सब भोग ,
हुआ योग से भी अधिक उसका विषम – वियोग

(इन वियोग के क्षणों में उर्मिला सब कुछ भूल चुकी थीं । एक राजवधू होने का बाबजूद भी कोई भोग उन्हें अच्छा नहीं लगता था । किसी भी अन्य योग से विषम या कठिन उनका यह विरह – ताप था ।)

आठ पहर चौंसठ घड़ी , स्वामी का ही ध्यान
छूट गया पीछे स्वयं , उसका आत्मज्ञान

(किसी भी प्रिया के समान उन्हें वियोग में सिर्फ अपने स्वामी अर्थात् अपने पति का ही ध्यान था । वह स्वयं के होने के भान को भी भूल चुकी थीं ।)
राधेश्याम ने भी अपनी रामायण में सीता जी द्वारा कहें गए वचनों को बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है –

कह चुकी बड़ी माता मुझसे , वे योगी , तो तू योगिनी हो ।
दे चुकीं मुझे भी आज्ञा यह , बाले ! तू भी वनवासिन हो । ।
पति उधर आज्ञा पाल रहे , मैं इधर आज्ञा पालूँगी ।
पति अपना धर्म सम्भाल रहे , मैं अपना धर्म सम्भालूँगी । ।

वाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड पृष्ठ संख्या 141

पिता पुत्र का सम्बन्ध
वाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड में श्री राम अपने पिता की सेवा करने और उसकी आज्ञापालन करने के महत्व को समझाते हुए कहते हैं कि–

न तो धर्म चरणं किंचिदस्ति महत्तरम् ।
यथा पितरि शुश्रुषा तस्य वा वचनक्रिपा ।।

अर्थात श्री राम कहते हैं कि पिता की सेवा अथवा , उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर कोई धर्माचरण नहीं है ।

राधेश्याम जी ने महाराज दशरथ का राम के प्रति अपार प्रेम होने पर भी अपने धर्म अर्थात वचन की मर्यादाओं को बताया है कि –

क्या उलझन है ! वरदान न दें , तो धर्म हमारा जाता है । ॠ
उस ओर राम वन जाता है , तो प्राण सिधारा जाता है ।
बस , अब कर्त्तव्य – तराजू में , दशरथ का जीवन तुलता है ।
उस ओर धर्म का बाट धरा , इस ओर प्राण का सौदा है ।
बेटे का प्यार , दूर हो जा , दशरथ इस समय धर्म पर है ।
ओ मोह , पलायन हो तुरन्त , मेरा उत्थान कर्म पर है ।
रानी ! रानी !! क्या कहती है , मेरा तो प्राण धर्म पर है । ॠ
मैं क्या , तू क्या , सन्तानें क्या , सब कुछ बलिदान धर्म पर है ।

अयोध्या कांड पृष्ठ संख्या128 – 129

माताओं का एक दूसरे के पुत्रों के प्रति प्रेम
राधेश्याम जी ने माता कैकयी का राम और भरत के प्रति जो अपार प्रेम था उस के बारे में लिखा है वह सराहनीय है, उसे भुलाया नहीं जा सकता !

मुझको समान हैं राम भरत , एक ही पेड़ की शाखें हैं ।

मुझ चिड़िया के दो पर हैं , यही , दोनों मेरी दो आँखें हैं ।
यदि भरत राम – सा प्यारा है ,तो राम भरत – सा प्यारा है !
गोदी का भरत दुलारा है , तो राम नयन का तारा है ।

अयोध्या कांड पृष्ठ संख्या 119

माता कौशल्या द्वारा भरत को समझाते हुए मधुर वचनों में कहती है कि –

हे मेरे हृदय , प्राण मेरे , क्यों आत्मघात पर तत्पर है ।
हम सब दुःखियों का जीवन अब , तेरे जीवन पर निर्भर है ।
आसरा राम – तन का है तो , जीवन का भरत सहारा है ।
यदि वह नयनों का तारा है , तो तू प्राणों से प्यारा है ।

अयोध्या कांड पृष्ठ संख्या 203

,माता सुमित्रा अपने प्रिय पुत्र लक्ष्मण को बड़े भाई की सेवा में तत्पर रहने की जो सीख देती है, वह निम्न है –

देखना लाल मेरे हो तुम , तो सत् पै सदा अड़े रहना ।
चौदह वर्षों की सेवा में , वीरों की भाँति खड़े रहना ।
किंचित भी पीछे हटे लाल , तो क्षत्री धर्म मिटा दोगे ।
कर्त्तव्य मार्ग से डिगे अगर , तो माँ का दूध लजा दोगे । ।
जाओ प्रसन्न रखो उनको , जो मुद – मंगल के दाता हैं ।
अब पिता तुम्हारे रामचन्द्र , अब सिया तुम्हारी माता हैं । ।

अयोध्या कांड पृष्ठ संख्या 147

श्री राम और सुग्रीव की मित्रता

मित्रता के विषय में अगर बात करें तो महाराज सुग्रीव और श्री राम की मित्रता का उदहारण अनुपम है ! अपने मित्र सुग्रीव को समझाते हुए श्री राम कहते हैँ कि –

देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित कराई । ।
विपत्ति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति का संत मित्र गुण एहा ।

भावार्थ

रामचरितमानस की चौपाई के अनुसार बताया गया है कि विपति के समय अपने मित्र की सहायता करने वाला तथा उससे अधिक स्नेह करने वाला ही सच्चा मित्र होता है !

जे ना मित्र दुःख होहिं । बिलोकत पातक भारी । ।
निज दुःख गिरी संक राज करी जाना ।
मित्रक दुःख राज मेरु समाना । ।

रामचरितमानस की यह चौपाई कहती है कि जो मनुष्य अपने मित्र के कष्ट को अपना कष्ट या दुख नहीं समझता है , ऐसे लोगों को देखने मात्र से पाप लगता है । कहने का अर्थ है कि ऐसे लोगों से सदैव दूरी बनाए रखनी चाहिए । इसके साथ ही जो व्यक्ति अपने बड़े से बड़े दुख को धूल की तरह मानता है वहीं मित्र के धूल के जैसे कष्ट को किसी पहाड़ की तरह मानता है , असल में वही सच्चा मित्र है ।

आदर्श भक्त की सेवा

हनुमान एक आदर्श भक्त हैँ, वे राम की सेवा के लिए अनुचार के समान सदैव तत्पर रहते हैँ ! शक्ति बाण से मूरछित लक्ष्मण को उनकी सेवा के करण ही प्राण दान प्राप्त हुआ था !
रामचरितमानस में बाबा गो स्वामी तुलसीदास श्री राम को एक आदर्श पुत्र तथा मात –पिता तथा गुरुजनों की सेवा करने वाला बतलाया है तथा लिखा है कि –

प्रातःकाल उठि के रघुनाथा, मातु पिता गुरू नाबहि माथा!
आयसु मागि करहि पुर काजा, देखि चरित हरषड़ मन राजा!!

अर्थात् श्री रघुनाथ जी प्रातःकाल उठकर माता पिता और गुरू को मस्तक नवाते हैं और आज्ञा लेकर नगर का काम करते हैं । उनके चरित्र देख देखकर राजा मन में हर्षित होते हैं ।

निष्कर्ष

परिदृश्य अतीत का हो या वर्तमान का , जनमानस ने राम के आदर्शों को खूब समझा – परखा है राम का पूरा जीवन आदर्शों , संघर्षों से भरा पड़ा है । राम सिर्फ एक आदर्श पुत्र ही नहीं , आदर्श पति और भाई भी थे । भारतीय समाज में मर्यादा , आदर्श , विनय , विवेक , लोकतांत्रिक मूल्यों और संयम का नाम राम है । जो व्यक्ति संयमित , मर्यादित और संस्कारित जीवन जीता है , निःस्वार्थ भाव से उसी में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों की झलक परिलक्षित हो सकती है। राम के आदर्श लक्ष्मण रेखा की उस मर्यादा के समान है जो लांघी तो अनर्थ ही अनर्थ और सीमा की मर्यादा में रहे तो खुशहाल और सुरक्षित जीवन ।

रामायण हमें जीवन के प्रत्येक पक्ष के साथ न्याय करना सिखाती है ! रामायण धर्म सिखाती है ! हमारे बच्चों को यदि हम इन पवित्र ग्रंथों की अमूल्य शिक्षा दें सकें तो उनमें भी वही संस्कार पल्लवित हो सकेंगे जैसे हम चाहते हैं ! रामायण के प्रत्येक चरित्र ने समाज को चिर काल तक जीवंत शिक्षा प्रदान की है ! वह शिक्षा जो जीवन में आत्मसात हो जाती है अर्थात घुल मिल जाती है !

आज के आधुनिक मानव समुदाय को वास्तविक अर्थो में धर्म का, कर्तव्य का अर्थ बता पाना ही इस लेख का उद्देश्य है ! स्नेह संबंधों के तार ऐसे मजबूत बंधन होते है जो साथ हों तो सबसे बड़ी शक्ति बन सकते हैं अन्यथा सबसे बड़ी कमजोरी!

रामायण के प्रत्येक पात्र ने संबंधों में निहित निस्वार्थ प्रेम का अनुपम उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है ! संबंधों का निस्वार्थ होना सबसे उत्तम लक्षण है एक सच्चे सम्बन्ध का ! आज का युग कितना भी प्रगति क्यों नहीं कर चुका लेकिन संवेदनाये तो जीवंत हैं ही नहीं ! सामान तो कीमती हैं लेकिन व्यक्ति नहीं ! ऐसे समय में समाज की दृष्टि को इस ओर जागृत करने के उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत विषय – स्नेह संबंधों का प्रमुख आधार – रामायण को लिया गया है !

सन्दर्भ

1. रामायण – ऋषि वाल्मीकि
2. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास
3. राधेश्याम रामायण – राधेश्याम जी
4. साकेत– मैथिली शरण गुप्त जी